वर्तमान तकनीकी समिन्वित समाज में विवेकानन्द द्वारा प्रतिपादित मानव निर्माण संबंधी शैक्षिक विचारों का विवेचनात्मक अध्ययन

आई0आई0एम0टी0, विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0)

की

'डॉक्टर ऑफ फिलॉसॉफी'

की उपाधि हेतु

प्रस्तुत

शोध प्रबंध की संक्षिप्त रूपरेखा

शोध निर्देशिका
डा0 मंजु चौधरी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
एम.ए., एम.एड.,एम. फिल.,
पी एच. डी. (शिक्षा शास्त्र)

शोधार्थी
बिमलेश कुमार दुबे

शिक्षा विभाग
आई0आई0एम0टी0, विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0)

<u>शोध की रूपरेखा</u>

- प्रस्तावना
- समस्यात्मक कथन
- अध्ययन का उद्देश्य
- मानव निर्माण में तकनीकी का योगदान
- साहित्य सर्वेक्षण
- शोध विधि
- अध्यायवार विभाजन
- ग्रंथ सूची

प्रस्तावना

आज के आधुनिक युग में मानव जीवन का प्रत्येक पक्ष वैज्ञानिक खोजों तथा अविष्कारों से प्रभावित है। शिक्षा का क्षेत्र भी इसके प्रभाव से मुक्त नहीं रह सका है। रेडियो, टेप रिकार्डर, टेलीविजन, कम्प्यूटर आदि का बढ़ता हुआ उपयोग शिक्षा की तकनीकी के निकट लाता जा रहा है। शिक्षा शास्त्र का कोई भी अंग चाहे वह विधियों व प्रविधियों का हो, चाहे उदेश्यो का हो, चाहे शिक्षण प्रक्रिया का हो, चाहे शोध का हो बिना तकनीकी के असहज महसूस होता है। सत्य तो यह है की तकनीकी विज्ञान इतना समृद्ध और शक्तिशाली होते जा रहा है इसके बिना कोई भी ज्ञान और कौशल अधूरे समझे जाते है। इसलिए तकनीकी और जीवन एक दूसरे के पर्याय के रूप में परिभाषित हो रहे हैं इसलिए यह उचित जान पड़ता है की तकनीकी शब्द को गहराई से जानने व समझने की आवश्यकता है।

तकनीकी शब्द अंग्रेजी भाषा के टेकनोलॉजी का हिन्दी रूपांतर है। टेकनोलॉजी शब्द ग्रीक भाषा के ‘‘टेक्ने’’ से निकला है, जिसका अर्थ- कला, कौशल और हाथो की चतुराई है। तकनीकी शब्द का सरलतम रूप अधारभूत औजारों का उपयोग एवं विकास है।

तकनीकी की प्रागैतहासिक काल से क्रमिक विकास के रूप में देखा जा सकता है। प्रागैतहासिक युग में आग का आविष्कार उसका उपयोग तकनीकी के श्रेणी में रखा जाएगा। क्रमशः नवपाषाण युग में भोजन की तलाश, पहिए का अविष्कार में भी तकनीकी को देखा जा सकता है क्योकि इसी का क्रमोत्तर विकास आधुनिक युग की मोटर गाड़ियां संचार व्यवस्था, इत्यादि तकनीकी उपयोग की गाथा कह रही हैं। तकनीकी का क्षेत्र अत्यन्त विकसित है। आधुनिक युग में यह विषय महत्वपूर्ण होता चला जा रहा है। विश्व के शिक्षा शास्त्री शिक्षा को व्यवहारिक विज्ञान के रूप में लाकर शिक्षक को शैक्षिक शिल्पी के रूप में जन साधारण को भेंट देने का प्रयत्न कर रहे है। इन प्रयत्नो में वैज्ञानिक आविष्कारों

टेलीविजन, टेप रिकार्डर, फिल्म, स्लाईड तथा अन्य आद्यौगिक खोजो से लाभ उठाने पर विशेष बल दिया जा रहा है, शिक्षा की प्रक्रिया को विज्ञान की आधार शिला पर प्रभावशाली बनाने का लक्ष्य प्राप्त करने हेतु शिक्षा शास्त्री एवं शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षण, तकनीकी के क्षेत्र में प्रयोग एवं शोध के परिवेश को उन्नत बनाने के लिए जुट गए है। यद्यपि शैक्षिक तकनीकी भारत वर्ष में एक नवीन चेतना की अभिव्यक्ति है लेकिन इसकी आवश्यकता एवं प्रसार से दूसरी समस्याएं ही उठ खड़ी हुई हैं। सूचना एवं प्रोद्यौगिकी के भौतिकवादी युग में तेजी से होने वाले आधुनिक औद्योगिक विकास विभिन्न संचार माध्यमों के बढ़ते आकर्षण एवं प्रभाव तथा जनसंख्या विस्फोट एवं नगरीकरण के कारण न केवल मानव की जीवन शैली प्रभावित हुई बल्कि मानव मूल्यो की संकट की स्थिति भी चुनौती के रूप में दस्तक दे रही है। समाजिक जीवन में समरसता के स्थान पर विघटन की स्थिति जन्म ले रही है। जिसके कारण निर्धनो व निर्बलो का शोषण वर्चस्व वाले लोगों के द्वारा निरंतर बढ़ता जा रहा है। बढ़ती स्वार्थ परता के कारण व्यक्ति अवसरवादी, आत्मकेन्द्रित, चाटुकार तथा कर्तव्यबोध से विमुख होकर मानवता से दूर होते जा रहा है। इसका प्रमुख कारण है उसमें मूल्य चेतना का अभाव यह स्थिति आज जीवन की विविध आयामों के रूप में चहुँओर व्याप्त है। भारतीय चिंतको एवं शिक्षाविदों में अग्रगण्य ‘‘स्वामी विवेकानन्द’’ ने अपने अद्‌भुत प्रतिभा के प्रकटीकरण से सम्पूर्ण मानवीय समाज को एक नवीन दिशा और दशा पर प्रकाश डालते हुए दिखाई पड़ते है।

स्वामी विवेकानन्द की शिक्षा सम्पूर्ण जीवन की शिक्षा है। जिसमें भौतिक विज्ञान राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, कला नीतीशास्त्र व धर्म को बराबर स्थान देते है। विवेकानन्द नव वेदान्तवादी शिक्षक हैं। इनके अनुसार भौतिक शिक्षा को ही अपनी सूक्ष्मतर स्तरो तक जारी रखना आध्यात्मिक शिक्षा है। वे तो यहाँ तक कहते हैं कि सारी मानवीय शिक्षा हीं आध्यात्मिक हैं क्योंकि सारी शिक्षा प्रणाली मानव में निहित आध्यात्मिक संभावनाओं को

व्यक्त करने के उदेश्य से रची गई है। वे संपूर्ण मानवीय विकास का विज्ञान एवं तकनीकी संस्थापित करते हैं।

मोटे तौर पर यह संभावनाएं तीन श्रेणी में आती हैः- 1. शारीरिक क्षमताएं है, जो कि मांसपेशियों व स्नायु तंत्र के विकास के द्वारा अभिव्यक्त होती है और नर-नारियों को हृस्ट-पूष्ट व बलिष्ठ बनाती है। 2. सूक्ष्मतर व गहरी मानसिक संभावनाएं है जों विचार, युक्ति, इच्छा व भावना की शक्तियों के रूप में विकसित होकर एक ऐसे बुद्धिमान व संवेदनशील व्यक्ति का निर्माण करती है जो समस्त विश्व को समझने की क्षमता का निर्माण करता है। 3. सर्वाधिक सूक्ष्म और गहन है जो मानव में निहित दिव्य संभावनाओं की अनुपम व महान उर्जा श्रोतो के सहित उसके अनन्तता व शाश्वत स्तर में निहित है।

विवेकानन्द तीसरी उपलब्धि को ही मानव की सर्वोच्चतम विकास की अवस्था मानते हैं जिसमें की वह अपने शारीरिक व मानसिक विकास की अवस्थाओं से उपर उठ जाता है। विवेकानन्द यह जोर देकर कहते हैं कि यदि मानव शारीरिक व मानसिक उन्नति में ही लगा रहता है तो आध्यात्मिक उन्नति नहीं कर सकता। जिसके कारण व अपने शक्ति का उपयोग दूसरे के शोषण में करेगा। स्वंय को हिंसा व युद्ध के माध्यम से अभिव्यक्त करेगा। जिसके फलस्वरूप वह न केवल दूसरो को हानि पहुंचायेगा वरन स्वंय ही विनाश को प्राप्त होगा।

आधुनिक समय के परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त प्रचलित शब्दावली वैज्ञानिक मानसिकता है। इस शब्दावली के पीछे पंडित जवाहर लाल नेहरू का योगदान माना जाता है। परन्तु इस शब्द के पीछे जो विचार है वह वस्तुतः काफी पहले का है। इसके लिए यदि किसी को साधुवाद देना हो तो वह स्वामी जी को ही देना होगा। क्योंकि उन्होने ही सर्वप्रथम सब को बताया कि विज्ञान को परे रखकर मनुष्य कोई विचार ही नहीं कर सकता और विज्ञान दर्शन शास्त्र का ही एक अभिन्न अंग है। स्वामी जी ने जैसे वैज्ञानिक मानसिकता पर जोर दिया

है वैसे ही आध्यात्मिक विकास पर भी जोर दिया है। स्वामी जी को दो समस्याओं का सामना करना पड़ा था जिनमें पहली थी समकालीन देशवासियों के चिंतन में जड़ता। अपने देशवासियों की भर्त्सना करते हुए स्वामीजी कहते हैं कि तुमलोगों ने अपने पेट को ही ईश्वर के आसन पर बैठा दिया है। रसोई घर ही तुम्हारी पूजा का मंदिर हो गया है। दूसरी समस्या थी इसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दू धर्म पर आक्रमण। उन लोगों को हिन्दू धर्म में कोई भी अच्छाई नही दिखाई पड़ती थी। उन्हे हिन्दू धर्म के विरूद्ध प्रचार में आनन्द मिलता था। इसलिए स्वामी जी ने खेद व्यक्त करते हुए कहा था ''हमलोग गरीब हैं हमें रोटी की जरूरत है और उसकी जगह तुम हमें ईंट पत्थर देते हो''।

स्वामी जी का कहना है कि विज्ञान तो दर्शनशास्त्र का ही अंग है दर्शन के अभाव में विज्ञान अर्थहीन है। बहुत से वैज्ञानिक दर्शनशास्त्र को ''सिर खपाना'' कह कर उड़ा देना चाहते है। परन्तु अनेक विशिष्ट वैज्ञानिक चेतना की व्याख्या ढूंढते हुए विफल हो रहे हैं जबकि यह मेरे आपके और हमसब के अनुभव के अधीन है। विज्ञान का एक नियम यह भी है कि जो चीज सबके अनुभव में आती है उसकी सत्यता को स्वीकार करना होता है। यदि एक व्यक्ति को ही अनुभव हो तो उसे कल्पना कह कर के उड़ाया जा सकता है। किसी किसी की धारणा यह है कि चेतना मस्तिष्क के भीतर कोई जटिल रासायनिक प्रक्रिया मात्र है और मस्तिष्क भी कम्प्यूटर से अधिक कुछ नहीं है। कम्प्यूटर को ब्लैक बॉक्स भी कहते हैं। इसका कार्य है कि घटनाएं हो रही है या हो सकती है और उनमें से जो जो युक्ति सिद्ध है उनका वर्गीकरण कर देना है। परन्तु इनमे से कौन सी युक्ति सिद्ध और कौन सी नहीं इस बात का निर्धारण स्वतंत्र मनुष्य के द्वारा होता हैं न की किसी यंत्र विशेष के द्वारा। हमें स्मरण रखना होगा कि मस्तिष्क और चेतना दो अलग-अलग चीजें है। मस्तिष्क एक प्रकार के कम्प्यूटर हो सकता है पर चेतना नहीं। यह असंभव है कि किसी दिन कम्प्यूटर चेतना की भूमिका ले सकेंगे। चेतना के द्वारा व्यक्तित्व में जो परिवर्तन आता है उसकी

व्याख्या गणित, रसायन और भौतिक शास्त्र के द्वारा नहीं हो सकती। अधिक से अधिक हम इतना ही कह सकते है कि मस्तिष्क के व्यापार तथा चेतना की उत्पति के विषय में कुछ कहा नही जा सकता। जीव वैज्ञानिक यदि कहे कि वे जीवन का सारा रहस्य जान चुके है तो यह अतिशयोक्ति माना जायेगा।

इतने दिनों के पश्चात् अब हमारे समझ में आता है कि मूल तत्व की खोज करना ही भौतिक विज्ञान का प्रधान कार्य है और इस तत्व की विविध अभिव्यक्तियों की व्याख्या को ही भौतिक विज्ञान के नियमों के रूप में जाना जाता है। इसी दृष्टिकोण से शंकराचार्य के परम ब्रह्म की मैं परम सत्य कहता हूं। जिससे संपूर्ण विश्व ब्रहमांड की उत्पति हुई है। स्वामीजी शिक्षा के द्वारा मनुष्य को लौकिक एवं पारलौकिक दोनो जीवनों के लिए तैयार करना चाहते थे। इनका विश्वास था कि जब तक हम भौतिक दृष्टि से संपन्न एवं सुखी नही होते तब तक ज्ञान, कर्म, भक्ति और योग ये सब कल्पना की वस्तु है। श्री विवेकानन्द के नव्य वेदांत में कहा गया है– शिक्षा द्वारा मनुष्य का निर्माण किया जाता है। समस्त अध्ययनों का अंतिम लक्ष्य मनुष्य का विकास करना है। जिससे मनुष्य द्वारा मनुष्य की संकल्प शक्ति का प्रवाह संयमित होकर प्रभावोत्पादक बन सके। उसी का नाम शिक्षा है। शिक्षा को विवेकानन्द ''मनुष्य के निर्माण की शिक्षा'' मानते थे। परन्तु मानव जीवन का अंतिम उद्देश्य अपने अन्दर छिपी आत्मा (पूर्णता) की अनुभूति ही मानते थे। स्वामी जी के अनुसार शिक्षा को मात्र सूचना तक सीमित नहीं करना चाहिए। जो विचार जीवन निर्माण में सहायक हो, उनकी अनुभूति करना आवश्यक हैं उनके अनुसार केवल कुछ विचारो को रटकर डिग्री प्राप्त कर लेना शिक्षा नहीं है। स्वामी जी के शब्दो में यदि तुम केवल पांच ही परखे हुए विचार आत्मसात कर के उनके अनुसार अपने जीवन चरित्र का निर्माण कर लेते हो तो तुम एक पूरे ग्रंथालय को कंठस्थ करने वाले की अपेक्षा अधिक शिक्षित हो। यदि शिक्षा का

अर्थ जानकारी ही होता तब तो पुस्तकालय संसार में सबसे बड़े संत हो जाते और विश्वकोष के महान ऋषि बन जाते।

लौकिक व आध्यात्मिक दोनो प्रकार का ज्ञान मान मन में निहित रहता है। जब धीरे-धीरे आवरण हटता है तो कहा जाता है कि व्यक्ति सीख रहा है। जिसके मन से आवरण पूर्णतः हट जाता है उसे सर्वज्ञ कहा जाता है। स्वामी जी के शब्दो में तुम किसी बालक को शिक्षा देने में उसी प्रकार समर्थ हो, जैसे कि किसी पौधे को बढ़ाने में। पौधा अपना विकास आप ही कर लेता है। बालक भी अपने आपको शिक्षित करता है। समस्त ज्ञान मनुष्य के अंदर में अवस्थित है, उसे केवल जागृति प्रबोधन की आवश्यकता है और बस इतना ही करना है कि वे अपने हाथ, पैर, कान और आंखो के उचित उपयोग के लिए अपनी बुद्धि का प्रयोग करना सीखें।

मनुष्य एक समाजिक प्राणी है जो समाज में रहकर ही अपना विकास कर सकता है इस प्रकार समाज का शिक्षा से घनिष्ठ संबंध है और समाज अपनी आवश्यकताओं, आकांक्षाओं एवं आदर्शो के अनुकूल शिक्षा के प्रक्रिया को सुनियोजित कर के अपने आदर्शो की प्राप्ति की चेष्टा करता है।

विवेकानन्द के शब्दों में समाजशास्त्र में समाज शब्द का प्रयोग जन साधारण द्वारा लगाये अर्थो में नही होता है वरना यह एक विशिष्ट अर्थ को प्रतिपादित करता है। समाजशास्त्र एक विज्ञान है। सामाजिक संबंध कम से कम दो व्यक्तियों की बीच स्थापित होता है तथा इसके साथ ही यह भी अनिवार्य है कि वे व्यक्ति एक दूसरे के अस्तित्व के प्रति जागरूक हों तथा परस्पर अंतः क्रिया भी कर रहे हो। यदि किसी स्थान पर दो या दो से अधिक व्यक्ति विद्यमान हो परन्तु उनमें किसी प्रकार के संबंध न हो और ना ही एक दूसरे को किसी भी रूप में प्रभावित न कर रहे हो तो उस स्थिति में उन व्यक्तियों के

समूह को समाज नहीं कहा जा सकता। व्यक्तियों के सामाजिक संबंध ही सामाजिक व्यवहारों के जनक होते हैं। और इन्ही सामाजिक व्यवहारो से मानवतावाद का संबंध है। मानवतावाद मनुष्य को संसार का केन्द्र मानता है और संपूर्ण मानव जाति को एक मानता है।

मानवतावाद शिक्षा द्वारा मनुष्य को एक अच्छा मनुष्य बनाने पर बल देता है। जिसका मुख्य उदेश्य मनुष्य में तर्क शक्ति का विकास मानवीय मूल्यो का विकास और सृजनात्मक शक्तियों का विकास। परन्तु मनुष्य के आध्यात्मिक विकास के बिना उसमें मानवीय मूल्यो का विकास नहीं हो सकता। स्वामी जी ने इन्ही मानवीय मूल्य के विकास पर जोर दिया है जिसमें तकनीकी विकास मनुष्यता के लिए हो ना कि अमनुष्यता के विकास के लिए हो। इसलिए तकनीकी समन्वित समाज में मानवता की निर्माण की भूमिका पर स्वामी विवेकानन्द का अमिट योगदान है।

समस्यात्मक कथन

वर्तमान तकनीकी समन्वित समाज मानवता के अभाव में दिशाहीन प्रतिगामी एवं प्रतिकूल प्रभाव देने वाला होता है। जिसके आलोक में शोधार्थी तकनीकी और मानवता के सहयोग से स्वस्थ्य समाज के निर्माण में अहम भूमिका निभाने का पक्षधर है। इसलिए शोधार्थी के शीर्षक ‘‘वर्तमान तकनीकी समन्वित समाज में विवेकानन्द द्वारा प्रतिपादित मानव निर्माण की शिक्षा से संबंधित विचारों का विवेचनात्मक अध्ययन’’ को लक्षित करके दिशा पूर्ण कार्य करने का इच्छुक है।

अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी अध्ययन के पीछे उद्देश्य छिपा रहता है लेकिन विषय की स्पष्टता के लिए उसके उद्देश्यों का प्रकटीकरण आवश्यक ही नही, जरूरी भी है। जिससे विषय की स्पष्टता

साफ दिखाई देती है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध के विषय ‘‘वर्तमान तकनीकी समन्वित समाज में विवेकानन्द द्वारा प्रतिपादित मानव निर्माण की शिक्षा से संबंधित विचारों का विवेचनात्मक अध्ययन’’ में शोधार्थी का मुख्य उदेश्य वर्तमान तकनीकी समाज की जटिलता एवं मानवीय संबंधो की अस्पष्टता को विवेकानन्द के दर्शन के आलोक में स्पष्ट करना एवं मानवता के आधार पर स्पष्ट एवं सरल प्रारूप का प्रकटीकरण एवं पुनरीक्षण करना प्रस्तुत अध्ययन का उदेश्य है। शोधकर्ता प्रस्तुत शोधकार्य में निम्नलिखित उदेश्यो को लेकर शोधकार्य करने का इच्छुक है।

1. तकनीकी का अर्थ पूर्ण पड़ताल एवं उसकी सार्थकता स्थापित करना।
2. मानवता की अवधारणा को स्पष्ट करना एवं मूल्यो के साथ उसका संबंध स्थापित करना।
3. मानवीय मूल्यो के सहयोग एवं वृद्धि में तकनीकी के उपयोग पर उपयुक्त विचार करना।

मानव निर्माण में तकनीकी का योगदान

तकनीकी या तकनीकी विज्ञान अंग्रेजी के 'Technology' शब्द का हिन्दी पर्याय है। इसका अर्थ है - दैनिक जीवन में वैज्ञानिक ज्ञान का प्रयोग करने का विधियाँ। अतः यह कहा जा सकता है कि वैज्ञानिक व्यवस्थाओं तथा प्रविधियों का प्रयोगात्मक रूप ही तकनीकी या तकनीकी विज्ञान है।

तकनीकी शब्द को अधिकतर मशीन या मशीन संबंधी प्रत्ययों से साधारणतः लोग जोड़ते हैं लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि तकनीकी में मशीन या मशीनरी का प्रयोग किया ही जाय। इसका तात्पर्य तो किसी भी प्रयोगात्मक कार्य से है जिसमें वैज्ञानिक ज्ञान या सिद्धान्तों का प्रयोग किया जाय।

प्रत्येक मानव मशीन की भांति कार्य करता है। अतः शिक्षा के क्षेत्र मे मानव व्यवहार में परिमार्जन तथा परिष्करण हेतु इसके वैज्ञानिक सिद्धान्तों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया जाना ही तकनीकी का सफलतम उपयोग है। शिक्षा वही है जो व्यक्ति के जीवन में उपयोगी हो। जीविका का साधन बने, व्यक्तित्व का विकास करे और व्यक्ति को योग्य बनाये। स्वामी जी का कथन है **"किसी राष्ट्र की उन्नति उसी अनुपात में होती है जिस अनुपात में उसकी जनता में शिक्षा और ज्ञान का प्रसार हो"** कहा जाता है कि शिक्षाविहीन मनुष्य पशु के समान होता है। शिक्षा वर्त्तमान और भविष्य दोनों को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। आज के समय की सबसे बड़ी माँग यही है कि शिक्षा में नवीनता, सजीवता और गुणवत्ता पूर्ण कार्य करने के लिए नवीन विधियों की आवश्यकता है, जिसमें विज्ञान एवं तकनीकी की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्राचीन समय में विद्यार्थियों के पठन-पाठन में पुरानी विधियों का उपयोग किया जाता था, जो वर्त्तमान समय में मनुष्य की आवश्यकता पूरा करने में सक्षम नहीं है। आज ब्लैक-बोर्ड की जगह स्मार्टबोर्ड ने ले लिया है। नवीन शिक्षण विधियों के उपयोग के लिए कम्प्यूटर के बिना कार्य करना लगभग असंभव है। शैक्षिक तकनीकी परम्परागत शिक्षण कला के विचारों को वैज्ञानिक आधार प्रदान करने वाली तकनीकी है, जो शैक्षिक प्रभावों को विभिन्न नीतियों एवं युक्तियों के माध्यम से नियंत्रित करती है, विकसित करती है और शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाती है। जिससे शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता मिलती है। विवेकानन्द एक ओर भौतिक विज्ञान, राजनीतिक शास्त्र तथा अर्थशास्त्र के तथा दूसरी और कला, नीतिशास्त्र और धर्म के स्थान को निरूपित करते हैं। इसके साथ ही वे यहाँ तक कहते हैं कि सारी मानवीय शिक्षा ही सम्पूर्ण मानवीय विकास के लिए बनी है, जिसमे विज्ञान एवं तकनीकी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विज्ञान एवं तकनीकी के संदर्भ में सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी हमारे समाज के उन प्रयासों में से एक हैं जिसके द्वारा आज के नागरिकों एवं नवपीढ़ी को गणना एवं सम्प्रेषण

Software तथा उनके आधार पर अनुप्रयोग तथा प्रबंधतंत्र के बारे में महत्वपूर्ण ज्ञान एवं कौशल सिखाने हेतु प्रशिक्षण प्रदान किया जाय। आज के युग में सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी के विषय में बुनियादी समझ विकसित करने तथा उसे उपयोगी रूप में इस्तेमाल में ला सकने की कुशलता आवश्यक है।

स्वामी जी के विचारों के परिप्रेक्ष्य में नई शिक्षण विधा परम्परागत रूप में प्रचलित प्राचीन अधिक्रमिता के विरूद्ध है। इसके समानान्तरित अधिक्रमता का नाम दिया जाता है, जिसके अन्तर्गत एक ऐसी व्यवस्था का बोध होता है जिसमें प्रत्येक कार्यकारी अंश या अभिकर्त्ता सभी से समान रूप में शासित होता है। इस प्रकार के उपागम परम्परागत शिक्षण एवं अनुदेषण तथा रचनावादी एवं संयोजितावादी स्वायत्त अधिगम के मध्य पाये जाने वाले द्वन्द्व को सुलझाता है। इस रूप में सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्वामी जी की दृष्टि में जानने का अर्थ है – “अव्यक्त को व्यक्त करना”। ज्ञान मनुष्य में निहीत होता है, कोई ज्ञान बाहर से नहीं आता है, यह अन्तर्वर्ती होता है तथा इसे प्रभावी रूप में फलीभूत किया जा सकता है। वे इस बात को दृढ़ता से कहा करते थे कि एक मनुष्य जो कुछ सीखता है वह अपनी आत्मा के ऊपर लगे हुए परत को हटाकर अन्वेषण द्वारा सीखता है। यह आत्मा अनन्त ज्ञान की खान है। दुनिया ने जो कुछ ज्ञान प्राप्त किया है वह मस्तिष्क से ही आता है। ब्रह्माण्ड का अनन्त पुस्तकालय व्यक्ति के मस्तिष्क में ही निहीत है। वाह्य जगत तो केवल एक सुझाव है, एक अवसर है जो व्यक्ति को अपने मस्तिष्क का अध्ययन करने के लिए प्रेरणा देता है।

तकनीकी एवं वैज्ञानिक विकास से शिक्षा का रूप परिवर्तित होता जा रहा है। उस पर औद्योगिकीकरण का काफी प्रभाव पड़ा है। जनसंचार एवं यातायात के साधनों ने जनसंख्या की गतिशीलता बढ़ायी है। ज्ञान का विस्फोट इतनी तीव्र गति से हो रहा है कि शैक्षिक

तकनीकी के क्षेत्र में नवाचार बढ़ते चले जा रहे हैं, जिसके कारण इन नवाचारों से अवगत होना, मनुष्यता के हित में व्यवहारिक सिद्ध होगा। इन नवाचारों में मल्टीमीडिया, कम्प्यूटर इन्सट्रक्शन, रेडियो, टेलीविजन, इन्टरनेट, ई–मेल, सिम्यूलेटेड शिक्षण, अन्तःक्रिया प्रणाली एवं अधिक्रमित अध्ययन शामिल है।

स्वामी जी के जीवन से हम कई चीजें सीख सकते हैं चाहे वह आध्यात्मिक उन्नति का क्षेत्र हो या भौतिक उन्नति का, "दायरे से मुक्त सोच के सिद्धान्त और व्यवहार को आत्मसात करने के लिए वे हमारे आदर्श कीर्तिमान हैं"। उन्होंने अपने सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को प्रेरित और उनके जीवन को परिवर्त्तित भी किया। विवेकानन्द शिक्षा के बारे में कहा करते थे "शिक्षा का अर्थ तुम्हारे मस्तिष्क में रखी हुई ऐसी जानकारियों का ढेर नहीं है जो आजीवन अनपची रहकर गड़बड़ी पैदा करती रहे"। जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सकें और विचारों का समायोजन कर सकें, वही वास्तव में शिक्षा कहलाये जाने योग्य हैं।

समग्र मानव निर्माण में जिन आधारभूत तत्वों की जरूरत होती है उनमें अच्छाई, प्रेम, सहजता, संवेदनशीलता इत्यादि की आवश्यकता होती है। स्वामी विवेकानन्द मानव निर्माण के लिए इन मूलभूत तत्वों की आवश्यकता पर बल देते थे और उनका कहना था कि मानव निर्माण में जब तक तकनीकी और विज्ञान सहयोग करते रहें तब तक उनका भरपूर उपयोग होना चाहिए क्योंकि मनुष्य की बुनियादी आवश्यकताएँ पुरा हुए बिना मानव निर्माण के आधारभूत तत्वों का विकास सम्भव नहीं है। इसलिए मानव निर्माण के विकास की प्रक्रिया में तकनीकी एवं विज्ञान की महत्ती आवश्यकता है।

साहित्य सर्वेक्षण

अनुसंधान एक ऐसी बौद्धिक तथा सृजनात्मक प्रक्रिया है जो मानव जाति के द्वारा पूर्व में अर्जित ज्ञान तथा अनुभवों पर आधारित होती है। यही कारण है कि मानव जाति द्वारा पूर्व में किए गए अनुसंधान कार्यो का लाभ वर्तमान अनुसंधानकर्ता को मिलता है। पूर्व के अध्ययन एवं अनुभवो का लाभ लिए बिना कोई भी अनुसंधान कार्य करना संभव नहीं होता है। अनुसंधानकर्ता के लिए संदर्भ सामग्री के खोज व अध्ययन एक समयसाध्य कार्य होने के बावजूद अत्यंत लाभदायक होता है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी विभिन्न साहित्यों का सहयोग लेगा। जिसमें प्रकाशित शोध प्रबंध संबंधित संदर्भ के आलोक में पत्र पत्रिकाओं शब्द कोशो, लघु पुस्तिकाएं, समाचार पत्र, इंटरनेट, कार्यालयी अभिलेख एवं ऐतीहासिक सामग्री का प्राथमिक एवं द्वितीयक श्रोत के रूप में उपयोग करेगा।

प्रस्तुत शोध से संबंधित कुछ साहित्य पुनर्निरीक्षण हैं जो निम्नलिखित हैं :-

1. **"स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त दर्शन एवं उनके शैक्षिक विचारों की वर्त्तमान प्रासंगिकता" शोधकर्त्ता – सत्य प्रकाश मोहता (2009) श्री जगदीश प्रसाद झाबरलाल टिबरेवाला युनिवर्सिटी :-** स्वामी जी के नव्य वेदान्त दर्शन से यह पता चलता है कि स्वामी जी श्रेष्ठ व्यक्ति का निर्माण करना, शिक्षा का प्रधान उद्देश्य मानते हैं। उनके अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसके द्वारा व्यक्ति में ब्रह्म साक्षात्कार, आत्मविश्वास, यथार्थ प्रेम की भावना धार्मिक विकास, वैराग्य आदि का विकास हो सके।
2. **"महात्मा गाँधी एवं स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा संबंधी तुलनात्मक अध्ययन" शोधकर्त्ता – धृति, श्री कृष्ण दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, V.B.S.P.U.-2011 :-** आज के संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द के प्रभावी विचारों तथा मूल्यों को आत्मसात करें

और लागू करें तो शिक्षा दर्शन के क्षेत्र में उन बीजों को बो सकेंगे जो कालान्तर में वृक्ष बनकर समाज के जीवन में पतझड़ के बजाय बसन्त की सर्जना कर सकेंगे।

3. **"डा. एनीवेसेन्ट एवं स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों का आधुनिक भारतीय शिक्षा के संदर्भ में एक समीक्षात्मक अध्ययन" शोधकर्त्ता – विनोद कुमार सिंह (2003) टी. डी. महाविद्यालय, V.B.S.P.U.-2003 :–** स्वामी विवेकानन्द ने आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिनमें चरित्र गठन, ब्रह्मचर्य पालन के साथ–साथ तकनीकी ज्ञान पर जोर दिया, जिससे शाश्वत मनुष्यता का निर्माण हो सके।

4. **"रविन्द्र नाथ टैगोर और स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन एवं वर्त्तमान परिस्थितियों में उसकी प्रासंगिकता" शोधकर्त्ता – प्रशान्त कुमार सिंह (2011) हंडिया पी.जी. महाविद्यालय, V.B.S.P.U.-2011 :–** स्वामी विवेकानन्द जी ने अपने ढंग से विविध आयामों का प्रसार करने का उत्तम प्रयास किया है। स्वामी जी ने भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में मानवता की स्थापना पर बल देने का संदेश देते हुए लोगों से इस परिप्रेक्ष्य में विशेष आग्रह किया है। उन्होंने एक ओर मानव के चरित्र निर्माण की बात की तो दूसरी ओर सामाजिक संरचना में अपनी अप्रतिम निष्ठा का सुसंयोजन किया। भावी शोधकर्त्ता के लिए यह बहुत ही उपयुक्त एवं सारगर्भित संदर्भ है जिससे जनसामान्य के समक्ष सम्प्रेषित कर उन्हें तकनीकी रूप से मानवतावादी संस्कृति, नवनीति से शिक्षित कर समाज, राष्ट्र व सम्पूर्ण विश्व के कल्याण में सम्मिलित कर सकें।

5. **Competitive Study of the educational thoughts Swami Vivekanand and Shri Arvindo Ghosh and their relivents in the contest of national policy on education 1986 :–** स्वामी विवेकानन्द के विचारों का आज के युग को अत्यन्त आवश्यकता है जिससे सम्पूर्ण मानव जाति

की सुरक्षा एवं चेतना को सुरक्षित रखा जा सकता है। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति में उनके महत्वपूर्ण विचारों का पालन करके मनुष्यता को बचाया जा सकता है।

6. **"A philosophical study of Swami Vivekanand's ideas on religion and social change". शोधकर्त्ता - सीमा मेहता (2012) Department of Philosophy, Kurukshetra University :-** स्वामी विवेकानन्द के अनुसार समाज का धर्म के साथ बहुत गहरा सम्बन्ध है। धर्म का अर्थ केवल एक निश्चित पथ अनुगमन नहीं है, बल्कि सही दिशा-दृष्टि के साथ काम करना ही दर्शन का उद्देश्य होता है।
7. **"विवेकानन्द का समग्र दर्शन : समीक्षात्मक अध्ययन" शोधकर्त्ता - पंकज कुमार त्रिपाठी (2003) काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, V.B.S.P.U.-2003 :-** समग्र दर्शन स्वामी जी की विचारधारा यथार्थ रूप में मानव के समस्त कार्यक्षेत्र में सहायक एवं शक्तिवर्द्धक रही है। वर्त्तमान तकनीकी युग में उपस्थित समस्याएँ उनका स्वरूप तथा उनके निराकरण का मार्ग स्वामी जी के विचारों में प्रदर्शित है।

शोध विधि

किसी भी कार्य को करने के लिए उपयुक्त तरीकों का प्रयोग करना पड़ता है। बिना उन तरीकों के इस्तेमाल के कार्य को लक्ष्य तक पहुंचाना संभव नही होता है। वैसे तो अनुसंधान की अनेक विधियां है जिन्हे मोटे तौर पर गुणात्मक और वर्णनात्मक दो प्रकारो में विभाजित किया जाता है। प्रस्तुत शोध कार्य में गुणात्मक शोध विधि के अन्तर्गत ऐतिहासिक एवं दार्शनिक अनुसंधान विधि का उपयोग किया जाएगा। जिससे शोधार्थी के लक्षित ध्येय की पूर्ति होगी।

शोध हेतु अध्याय योजना

किसी भी शोध के लिए विशिष्ट एवं व्यवस्थित प्रक्रिया का सहारा लेना पड़ता है जिससे लक्षित गंतव्य तक पहुंचने में सुविधा एवं आसानी होती है। इसी क्रम में शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध का क्रमवार अध्याय विभाजन किया है जिससे विषय की समझ में सुविधा हो। शोधार्थी ने प्रस्तावित शोध– ''वर्तमान तकनीकी समन्वित समाज में विवेकानन्द द्वारा प्रतिपादित मानव निर्माण की शिक्षा से संबंधित विचारों का विवेचनात्मक अध्ययन'' जो इस प्रकार हैः–

अध्यायवार विभाजन

भूमिका

1. शोध का परिचय
2. शोध विषय का औचित्य एवं महत्व
3. विषय विस्तार की सीमायें
4. मौलिकता
5. शोध प्रविधि
6. आभार

1. अध्याय

(क) विवेकानन्द का संक्षिप्त जीवन परिचय

(ख) विवेकानन्द और शिक्षा

(ग) भारतीय दर्शन के परिप्रेक्ष्य में विवेकानन्द का योगदान

(घ) वेदान्त और विवेकानन्द का दर्शन

निष्कर्ष

2. अध्याय

(क) तकनीकी का अर्थ

(ख) तकनीकी का स्वरूप

(ग) इतिहास के संदर्भ में तकनीकी का विकास

(घ) आधुनिक संदर्भ में तकनीकी का योगदान

(ड.) तकनीकी की आवश्यकता एवं महत्व

निष्कर्ष

3. अध्याय

(क) मानवता का अर्थ एवं स्वरूप

(ख) समाज की अर्थ एवं प्रकृति

(ग) मानवता की समाजिक उपयोगिता

(घ) मूल्यो के परिप्रेक्ष्य में मानवता की प्रासंगिकता

निष्कर्ष

4. अध्याय

(क) शिक्षा का अर्थ एवं स्वरूप

(ख) शिक्षा की ऐजिहासिक पृष्ठभूमि

(ग) शिक्षा एवं मानवता का संबंध

(घ) शिक्षा एवं तकनीकी का संबंध

(ड.) मानवता के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा एवं तकनीकी का अन्तर क्रियात्मक संबंध

निष्कर्ष

5. अध्याय

(क) विवेकानन्द का दर्शन एवं विज्ञान

(ख) विवेकानन्द के दर्शन की वैज्ञानिकता

(ग) विवेकानन्द के दर्शन में तकनीकी के समाजिक उपयोग की सार्थकता

(घ) विवेकानन्द के दर्शन में मानवतावाद के प्रसार में तकनीकी उपयोग की सार्थकता

निष्कर्ष

6. अध्याय

(क) तकनीकी समन्वित समाज में विवेकानन्द के दर्शन का स्थान

(ख) विवेकानन्द के दार्शनिक पृष्टभूमि के संदर्भ में मानव निर्माण की शिक्षा

(ग) तकनीकी का मानवता के विकास में योगदान विवेकानन्द के दर्शन के परिप्रेक्ष्य में

निष्कर्ष

7. उपसंहार

ग्रंथ की सूची

लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशक का नाम	वर्ष
स्वामी विवेकानन्द	विवेकानन्द साहित्य भाग- 1 भाग- 2 भाग- 3 भाग- 4 भाग- 5 भाग- 6 भाग- 7 भाग- 8 भाग- 9 भाग- 10	अद्वैत आश्रम प्रकाशन विभाग 5 डिही एण्टानी रोड, कोलकाता	2014
सम्पादक स्वामी विदेहात्मानन्द	स्वामी विवेकानन्द एवं उनका अनुदान	अद्वैत आश्रम प्रकाशन विभाग 5 डिही एण्टानी रोड, कोलकाता	2012
स्वामी रंगनाथानन्द	स्वामी विवेकानन्द का मानवतावाद	अद्वैत आश्रम	2015
स्वामी रंगनाथानन्द अनुवादक- डा0 केदारनाथ लाल	आधुनिक भारत के निर्माण में शिक्षको का कर्तव्य और दायित्व	रामकृष्ण मठ, नागपुर	2014
स्वामी निखलेश्वरानन्द अनुवादक- स्वामी प्रयत्यानन्द	शिक्षक क्रांति का अग्रदूत	रामकृष्ण मिशन, इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर, कोलकाता	2003
स्वामी विवेकानन्द अनुवादक- स्वामी विदेहात्मानन्द	शिक्षा का आदर्श	रामकृष्ण मठ, नागपुर	2016
डा0 एस0पी0 कुलश्रेष्ट	शैक्षिक तकनीकी के मूल अधार	अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा	2010
डा0 लक्ष्मी लाल के0 ओड़	शिक्षा की दार्शिनिक पृष्टभूमि	राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी	2013

लाल एवं पलोढ़	शैक्षिक चिंतन एवं प्रयोग	आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ	2010
स्वामी विवेकानन्द	राजयोग	रामकृष्ण मठ, नागपुर	1999
प्रो0 एस0पी0 गुप्ता	अनुसंधान संदर्शिका	शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद	2017
पी0एन0 राय और सी0पी0 राय	अनुसंधान परिचय	लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा	2011